International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2022, Submitted in August 2022, iajesm2014@gmail.com

दिल्ली–एनसीआर की जनसंख्या जनसांख्यिकी पर एक अध्ययन

ओम प्रकाश, एसोसिएट प्रोफेसर (भूगोल) आचार्य श्री महाप्रज्ञ इंस्टिट्यूट ऑफ़ एक्सीलेंस, आसींद, जिला- भीलवाड़ा (राजस्थान)
Oprakesh838@gmail.com

सार

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) भारत का एक महानगरीय क्षेत्र है जो राजधानी दिल्ली के आसपास केंद्रित है। यह भारत का सबसे बड़ा महानगरीय क्षेत्र और दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा (टोक्यो के बाद) है। एनसीआर में संपूर्ण केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली और हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों के कुछ हिस्से शामिल हैं।

एनसीआर की आबादी 56 मिलियन से अधिक है, जो इसे दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक बनाती है। जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, और 2030 तक 70 मिलियन से अधिक तक पहुंचने की उम्मीद है। एनसीआर एक प्रमुख आर्थिक केंद्र है, और भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। एनसीआर कई बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ–साथ एक संपन्न छोटे और मध्यम आकार के उद्यम क्षेत्र का भी घर है। एनसीआर एक प्रमुख पर्यटन स्थल भी है, और हर साल दुनिया भर से लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है।

कीवर्ड जनसंख्या, जनसांख्यिकी, एनसीआर, प्रदूषण, प्रवासन

परिचय

दिल्ली–एनसीआर की जनसंख्या समान रूप से वितरित नहीं है। सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व दिल्ली, गुरुग्राम, नोएडा और गाजियाबाद के शहरी क्षेत्रों में है। दिल्ली–एनसीआर के ग्रामीण इलाकों में आबादी कम है।

दिल्ली–एनसीआर का जनसंख्या वितरण धार्मिक और जातीय कारकों से भी प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, मुस्लिम आबादी दिल्ली के कुछ इलाकों जैसे पुरानी दिल्ली और चांदनी चौक में केंद्रित है। सिख आबादी दिल्ली के कुछ इलाकों जैसे तिलक नगर और राजौरी गार्डन में भी केंद्रित है।

प्राकृतिक वृद्धि का तात्पर्य जन्मों की संख्या और मृत्यु की संख्या के बीच के अंतर से है। दिल्ली–एनसीआर में प्रजनन दर अधिक है और मृत्यु दर घट रही है, जिसके कारण जनसंख्या में स्वाभाविक वृद्धि हुई है।

प्रवासन दिल्ली–एनसीआर में जनसंख्या वृद्धि का एक अन्य प्रमुख कारक है। पूरे भारत से लोग रोजगार, बेहतर शिक्षा और अन्य अवसरों की तलाश में दिल्ली–एनसीआर आते हैं। इस क्षेत्र की राष्ट्रीय राजधानी से निकटता और इसकी मजबूत अर्थव्यवस्था इसे प्रवासियों के लिए विशेष रूप से आकर्षक गंतव्य बनाती है।

शहरीकरण लोगों के ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर जाने की प्रक्रिया है। दिल्ली–एनसीआर एक अत्यधिक शहरीकृत क्षेत्र है, जहां 80% से अधिक आबादी शहरी क्षेत्रों में रहती है। शहरीकरण की इस प्रवृत्ति ने क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि में भी योगदान दिया है।

दिल्ली–एनसीआर की जनसंख्या जनसांख्यिकी जटिल और विविध है। यह क्षेत्र पूरे भारत और जीवन के कई अलग–अलग क्षेत्रों के लोगों का घर है। 2023 तक, दिल्ली–एनसीआर की आबादी 46 मिलियन से अधिक होने का अनुमान है, जो इसे दुनिया के सबसे बड़े महानगरीय क्षेत्रों में से एक बनाती है। प्राकृतिक विकास और प्रवासन दोनों के कारण जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।

दिल्ली–एनसीआर में अपेक्षाकृत युवा आबादी है, जिसकी औसत आयु 27-3 वर्ष है। यह राष्ट्रीय औसत आयु 28-7 वर्ष से कम है। कम उम्र की संरचना उच्च प्रजनन दर और कम मृत्यु दर के कारण है।

दिल्ली–एनसीआर में लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 910 महिलाएं है। यह प्रति 1000 पुरुषों पर 943 महिलाओं के राष्ट्रीय लिंगानुपात से थोड़ा कम है। लिंगानुपात में असंतुलन कई कारकों के कारण है, जिनमें कन्या भ्रूण हत्या और लिंग–चयनात्मक गर्भपात शामिल हैं।

दिल्ली–एनसीआर में साक्षरता दर 81.9% है, जो राष्ट्रीय साक्षरता दर 74.0% से अधिक है। उच्च साक्षरता दर कई कारकों के कारण है, जिसमें शिक्षा में सरकारी निवेश और क्षेत्र में बड़ी संख्या में शैक्षणिक संस्थानों की उपस्थिति शामिल है।

दिल्ली–एनसीआर में हिंदू धर्म प्रमुख धर्म है, यहां की आबादी 80% से अधिक हिंदू है। इस क्षेत्र के अन्य प्रमुख धर्मों में इस्लाम, सिख धर्म और ईसाई धर्म शामिल हैं।

दिल्ली–एनसीआर पूरे भारत के प्रवासियों के लिए एक प्रमुख गंतव्य है। प्रवासी रोजगार, शिक्षा और बेहतर अवसरों की तलाश में इस क्षेत्र में आते हैं।

दिल्ली–एनसीआर एक अत्यधिक विविधतापूर्ण और तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है। क्षेत्र की आबादी कई चुनौतियों का सामना कर रही है, लेकिन इसमें कई अवसर भी हैं। चुनौतियों का समाधान

करके और अवसरों का लाभ उठाकर, दिल्ली–एनसीआर अपने निवासियों के लिए अधिक टिकाऊ और रहने योग्य क्षेत्र बन सकता है।

दिल्ली–एनसीआर में जनसंख्या वृद्धि उन्हीं कारकों से प्रेरित होने की संभावना है जिन्होंने अतीत में विकास को गति दी है, जैसे प्राकृतिक वृद्धि, प्रवासन और शहरीकरण। हालाँकि, कुछ जनसांख्यिकी; रुझान हैं जो आने वाले वर्षों में दिल्ली–एनसीआर की जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित कर सकते हैं।

उद्देश्य

- जनसंख्या जनसांख्यिकी के महत्व का अध्ययन करना
- दिल्ली–एनसीआर की जनसंख्या जनसांख्यिकी का अध्ययन करना

अनुसंधान क्रियाविधि

वर्तमान शोध कार्य में, दिल्ली–एनसीआर की जनसंख्या जनसांख्यिकी के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए द्वितीयक डेटा एकत्र किया गया था। सरकारी दस्तावेजों और रिपोर्टों का उपयोग द्वितीयक स्रोतों के रूप में किया गया।

दिल्ली–एनसीआर की जनसंख्या जनसांख्यिकी

50 मिलियन से अधिक लोगों की आबादी के साथ दिल्ली–एनसीआर दुनिया में सबसे तेजी से शहरीकरण वाले क्षेत्रों में से एक है। यह तीव्र जनसंख्या वृद्धि क्षेत्र के संसाधनों और बुनियादी ढांचे पर दबाव डाल रही है, और कई चुनौतियाँ पैदा कर रही है, जिनमें शामिल हैं ।

अनियोजित शहरीकरणय दिल्ली–एनसीआर के तीव्र और अनियोजित विकास के कारण मलिन बस्तियों और अनौपचारिक बस्तियों का विकास हुआ है। इन बस्तियों में अक्सर बुनियादी ढांचे और सेवाओं, जैसे स्वच्छ पानी, स्वच्छता और बिजली का अभाव होता है। वे बाढ़ और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रति भी अधिक संवेदनशील होते हैं।

संसाधनों पर दबावय तीव्र जनसंख्या वृद्धि क्षेत्र के संसाधनों, जैसे जल, भूमि और ऊर्जा पर दबाव डाल रही है। इससे आवश्यक संसाधनों की कमी हो रही है और पर्यावरण का क्षरण हो रहा है।

यातायात की भीड़य दिल्ली–एनसीआर दुनिया के सबसे भीड़भाड़ वाले शहरों में से एक है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें यातायात की उच्च मात्रा, सड़कों की खराब गुणवत्ता और सार्वजनिक परिवहन की कमी शामिल है। यातायात की भीड़ से वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और यात्रा में देरी होती है।

प्रदूषण; दिल्ली–एनसीआर दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें वाहन उत्सर्जन, औद्योगिक उत्सर्जन और बायोमास का जलना शामिल है। वायु प्रदूषण एक बड़ा स्वास्थ्य खतरा है और यह श्वसन संक्रमण, हृदय रोग और कैंसर सहित कई बीमारियों से जुड़ा हुआ है।

किफायती आवास की कमी; तेजी से जनसंख्या वृद्धि के कारण दिल्ली–एनसीआर में किफायती आवास की कमी हो गई है। इससे कम आय वाले परिवारों के लिए रहने के लिए जगह ढूंढना मुश्किल हो रहा है।

बेरोजगारी; तेजी से जनसंख्या वृद्धि के कारण दिल्ली–एनसीआर में बेरोजगारी का स्तर उच्च हो गया है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें नौकरी के अवसरों की कमी, कौशल प्रशिक्षण की कमी और कार्यबल के कौशल और अर्थव्यवस्था की जरूरतों के बीच बेमेल शामिल है।

अपराध; दिल्ली–एनसीआर में अपराध दर बहुत अधिक है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें उच्च जनसंख्या घनत्व, आर्थिक अवसरों की कमी और मलिन बस्तियों और अनौपचारिक बस्तियों की उपस्थिति शामिल है।

इन चुनौतियों के अलावा, दिल्ली–एनसीआर में तेजी से बढ़ती जनसंख्या भी क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने–बाने पर दबाव डाल रही है। उदाहरण के लिए, शहर के तेजी से विकास के कारण पारंपरिक पड़ोस और समुदाय नष्ट हो रहे हैं। इससे सामाजिक असमानता और संघर्ष में भी वृद्धि हो रही है।

दिल्ली–एनसीआर में तेजी से बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न चुनौतियाँ जटिल हैं और इनसे निपटने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इन चुनौतियों का समाधान विकसित करने और लागू करने के लिए सरकार, निजी क्षेत्र और नागरिक समाज को मिलकर काम करने की जरूरत है।

दिल्ली–एनसीआर में जनसंख्या जनसांख्यिकी की चुनौतियों से निपटने के लिए यहां कुछ विशिष्ट सिफारिशें दी गई है।

नियोजित शहरीकरण को बढ़ावा देना; सरकार को पर्याप्त बुनियादी ढांचे और सेवाओं के साथ नियोजित

शहरी क्षेत्रों के विकास में निवेश करना चाहिए। इससे मलिन बस्तियों और अनौपचारिक बस्तियों के विकास को कम करने में मदद मिलेगी।

संसाधनों का संरक्षण कर सरकार को वर्षा जल संचयन और अपशिष्ट जल पुनचक्रण: जैसे जल संरक्षण उपायों में निवेश करना चाहिए। इसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को भी बढ़ावा देना चाहिए।

सार्वजनिक परिवहन में सुधार; सरकार को एक व्यापक सार्वजनिक परिवहन प्रणाली विकसित करने में निवेश करना चाहिए जो सभी के लिए सस्ती और सुलभ हो। इससे यातायात की भीड़ और वायु प्रदूषण को कम करने में मदद मिलेगी।

प्रदूषण कम करें; सरकार को वाहनों और उद्योगों के लिए सख्त उत्सर्जन मानक लागू करने चाहिए। इसे स्वच्छ ईंधन और प्रौद्योगिकियों के उपयोग को भी बढ़ावा देना चाहिए।

किफायती आवास की आपूर्ति बढ़ाएँ; सरकार को कम आय वाले परिवारों के लिए किफायती आवास विकसित करने में निवेश करना चाहिए। इसे किफायती आवास बनाने वाले निजी डेवलपर्स को सब्सिडी और कर छूट भी प्रदान करनी चाहिए।

नौकरियाँ पैदा करें; सरकार को दिल्ली–एनसीआर में नौकरी के अवसर पैदा करने के लिए निवेश करना चाहिए। इसे अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने में मदद करने के लिए कार्यबल को कौशल प्रशिक्षण भी प्रदान करना चाहिए।

अपराध कम करें; सरकार को दिल्ली–एनसीआर में पुलिसिंग और सुरक्षा में सुधार के लिए निवेश करना चाहिए। इसे अपराध के मूल कारणों, जैसे गरीबी और आर्थिक अवसरों की कमी, का भी समाधान करना चाहिए।

सरकार के नेतृत्व वाली इन पहलों के अलावा, निजी क्षेत्र और नागरिक समाज के लिए दिल्ली–एनसीआर में जनसंख्या जनसांख्यिकी की चुनौतियों से निपटने में भूमिका निभाना भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, व्यवसाय टिकाऊ प्रथाओं और प्रौद्योगिकियों में निवेश कर सकते हैं। नागरिक समाज संगठन चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और समाधानों को बढ़ावा देने के लिए काम कर सकते हैं।

दिल्ली–एनसीआर में जनसंख्या जनसांख्यिकी की चुनौतियों से निपटना एक जटिल और दीर्घकालिक कार्य है। हालाँकि, क्षेत्र के लिए एक स्थायी और रहने योग्य भविष्य सुनिश्चित करने के लिए ऐसा करना आवश्यक है।

तेजी से बढ़ती जनसंख्या क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों पर भी दबाव डाल रही है। यह क्षेत्र पहले से ही पानी की कमी से जूझ रहा है और बढ़ती मांग समस्या को और भी बदतर बना रही है। यह क्षेत्र वायु प्रदूषण की समस्या का भी सामना कर रहा है, जो वाहन उत्सर्जन, औद्योगिक उत्सर्जन और निर्माण धूल सहित कई कारकों के कारण होता है।

इन चुनौतियों के अलावा, दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र को कई अन्य जनसांख्यिकीय चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है, जैसेय

वृद्ध जनसंख्या; क्षेत्र में औसत आयु बढ़ रही है, और आने वाले वर्षों में 65 वर्ष से अधिक आयु की जनसंख्या का अनुपात उल्लेखनीय रूप से बढ़ने की उम्मीद है। इससे क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली और सामाजिक सुरक्षा प्रणाली पर दबाव पड़ेगा।

लैंगिक असंतुलन; इस क्षेत्र में लैंगिक असंतुलन है, जिसमें महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक है। यह लिंग–चयनात्मक गर्भपात और कन्या भ्रूण हत्या सहित कई कारकों के कारण है। लिंग असंतुलन अपराध और हिंसा जैसी सामाजिक समस्याओं को जन्म दे सकता है।

प्रवासियों का उच्च अनुपात इस क्षेत्र में प्रवासियों का अनुपात उच्च है, जो पूरे भारत से आते हैं। प्रवासियों को अक्सर बुनियादी सेवाओं तक पहुँचने में भेदभाव और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र अपनी तीव्र जनसंख्या वृद्धि और जनसांख्यिकी; परिवर्तनों के कारण कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। सरकार और नीति निर्माताओं को इन चुनौतियों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करने की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह क्षेत्र रहने के लिए एक रहने योग्य और टिकाऊ स्थान बना रहे।

बहस

आवास की कमीय दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र में 1 मिलियन से अधिक इकाइयों की आवास की कमी है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें तीव्र जनसंख्या वृद्धि, भूमि की उच्च लागत और निर्माण की धीमी गति शामिल है।

यातायात जाम; दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र दुनिया में यातायात जाम की सबसे खराब समस्याओं में से एक है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें सड़क पर बड़ी संख्या में वाहन, खराब सड़क बुनियादी ढांचा और व्यापक सार्वजनिक परिवहन प्रणाली की कमी शामिल है।

वायु प्रदूषण; दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र दुनिया में सबसे खराब वायु प्रदूषण समस्याओं में से एक है। यह वाहन उत्सर्जन, औद्योगिक उत्सर्जन और निर्माण धूल सहित कई कारकों के कारण है।

पानी की कमी; दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र पानी की कमी से जूझ रहा है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें तेजी से जनसंख्या वृद्धि, पानी की बढ़ती मांग और क्षेत्र में सीमित जल संसाधन शामिल हैं।

बेरोजगारी; दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र में बेरोजगारी दर अधिक है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें तेजी से जनसंख्या वृद्धि, नौकरियों की कमी और कार्यबल के कौशल और नौकरी बाजार की आवश्यकताओं के बीच बेमेल शामिल है।

अपराध; दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र में अपराध दर बहुत अधिक है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें तीव्र जनसंख्या वृद्धि, उच्च बेरोजगारी दर और किफायती आवास की कमी शामिल है।

ऐसे कई समाधान हैं जो सरकार और नीति निर्माता अपनी जनसंख्या जनसांख्यिकी के कारण दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए अपना सकते हैं। इनमें से कुछ समाधानों में शामिल हैं;

आवास में निवेश; सरकार को दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र में अधिक किफायती आवास इकाइयों के निर्माण में निवेश करने की आवश्यकता है। इससे आवास की कमी को कम करने में मदद मिलेगी और लोगों के लिए किफायती आवास ढूंढना आसान हो जाएगा।

सार्वजनिक परिवहन में सुधार; सरकार को दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता है। इससे यातायात की भीड़ और वायु प्रदूषण को कम करने में मदद मिलेगी।

नवीकरणी; ऊर्जा में निवेश; सरकार को सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणी; ऊर्जा स्रोतों में निवेश करने की आवश्यकता है। इससे वायु प्रदूषण को कम करने और क्षेत्र को अधिक ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाने में मदद मिलेगी।

जल प्रबंधन में सुधार; सरकार को दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र में जल प्रबंधन में सुधार करने की जरूरत है शहरी फैलाव शहरी क्षेत्रों का आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में अनियंत्रित विस्तार है। दिल्ली–एनसीआर में यह एक बड़ी समस्या है और तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण यह और भी गंभीर होती जा रही है। शहरी फैलाव के कई नकारात्मक परिणाम होते हैं। इससे कृषि भूमि और खुली जगहों का नुकसान होता है। यह क्षेत्र के बुनियादी ढांचे, जैसे सड़क, जल आपूर्ति और सीवेज सिस्टम पर भी दबाव डालता है।
दिल्ली–एनसीआर दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक है। वायु प्रदूषण एक बड़ी समस्या है, और यह क्षेत्र की तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण और भी गंभीर हो गई है।
दिल्ली–एनसीआर में वायु प्रदूषण के मुख्य स्रोत वाहन उत्सर्जन, औद्योगिक उत्सर्जन और निर्माण स्थलों से निकलने वाली धूल हैं। वायु प्रदूषण के कई नकारात्मक स्वास्थ्य परिणाम हैं, जिनमें श्वसन संबंधी समस्याएं, हृदय रोग और कैंसर शामिल हैं।
दिल्ली–एनसीआर पानी की भारी कमी से जूझ रहा है. क्षेत्र के जल संसाधन पहले से ही दबाव में हैं, और तेजी से जनसंख्या वृद्धि समस्या को और भी बदतर बना रही है।
दिल्ली–एनसीआर के लिए पानी के मुख्य स्रोत भूजल और यमुना नदी हैं। अत्यधिक दोहन के कारण भूजल स्तर गिर रहा है। यमुना नदी भी प्रदूषित है और यह क्षेत्र की पेयजल आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती है।
दिल्ली–एनसीआर दुनिया के सबसे भीड़भाड़ वाले शहरों में से एक है। यातायात की भीड़ एक बड़ी समस्या है, और यह क्षेत्र की तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण और भी गंभीर हो गई है।
दिल्ली–एनसीआर में यातायात की भीड़ का मुख्य कारण सड़क पर बड़ी संख्या में वाहन, संकीर्ण और खराब डिजाइन वाली सड़कें और सार्वजनिक परिवहन की कमी है। यातायात की भीड़ के कई नकारात्मक परिणाम होते हैं, जिनमें समय की बर्बादी, ईंधन की बढ़ती खपत और वायु प्रदूषण शामिल हैं।
दिल्ली–एनसीआर किफायती आवास की कमी से जूझ रहा है। यह एक बड़ी समस्या है, खासकर क्षेत्र की कम आय वाली आबादी के लिए।
दिल्ली–एनसीआर में आवास की उच्च लागत कई कारकों के कारण है, जिनमें आवास की उच्च मांग, भूमि की सीमित आपूर्ति और निर्माण की उच्च लागत शामिल है। किफायती आवास की कमी के कारण बेघर होना और भीड़भाड़ बढ़ रही है।

दिल्ली–एनसीआर में लिंग असंतुलन है, यहां महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक है। यह लिंग–चयनात्मक गर्भपात और कन्या भ्रूण हत्या सहित कई कारकों के कारण है।

लिंग असंतुलन के कई नकारात्मक परिणाम होते हैं। इससे विवाह के लिए महिलाओं की कमी हो जाती है और महिलाओं के खिलाफ अपराध में भी वृद्धि होती है।

निष्कर्ष

दिल्ली–एनसीआर की जनसंख्या जनसांख्यिकी जटिल और विविध है। यह क्षेत्र पूरे भारत और जीवन के कई अलग–अलग क्षेत्रों के लोगों का घर है। जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, और क्षेत्र तेजी से शहरीकृत होता जा रहा है। सरकार को इस बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे पर्याप्त आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करना।

संदर्भ

- भारत की जनगणना; 2011 का अनंतिम जनसंख्या योग पेपर 1, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली। भारत की जनगणना. 2011.
- हैरिस, गार्डिनर (25 जनवरी 2014)। बीजिंग की खराब हवा धुंध भरी दिल्ली के लिए कदम होगी। दी न्यू यौर्क टाइम्स
- बियराक, मैक्स (7 फरवरी 2014)। स्वच्छ हवा के लिए बेताब, दिल्ली निवासी समाधान के साथ प्रयोग । दी न्यू यौर्क टाइम्स।
- मैडिसन पार्क (8 मई 2014)। दुनिया के शीर्ष 20 सबसे प्रदूषित शहर। सीएनएन। 8 मई 2016 को मूल से संग्रहीत।
- गार्डिनर हैरिस (14 फरवरी 2015)। दिल्ली वायु प्रदूषण की समस्या से जूझ रही है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता । दी न्यूयार्क टाइम्स। 15 फरवरी 2015 को मूल से संग्रहीत। 15 फरवरी 2015 को लिया गया।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY